MSP ने बिगाड़ा चीनी के भाव पर सट्टेबाजी का खेल

[जयश्री भोसले। पुणे]

सरकार के चीनी का अनिवार्य न्यूनतम समर्थन मूल्य तय करने के बाद इसके भाव लेकर होने वाली सट्टेबाजी बंद हो गई। अब सिर्फ घरेलू बाजार में व्यापार करने वाले अधिकतर छोटे और मझोले कारोबारी अन्य कमोडिटीज का रुख कर रहे हैं। पिछले सीजन में चीनी का बंपर उत्पादन हुआ था, जिसके चलते भाव भी लगातार गिर रहा था। इसे रोकने के लिए केंद्र सरकार ने पिछले साल जून में चीनी का न्यूनतम समर्थन मूल्य (एमएसपी) तय कर दिया था।

एमएसपी से पहले भारतीय बाजार में चीनी के दाम में भारी भारी गिरावट होना आम बात थी। एक समय भाव 24 रुपये किलो पर गया था और इससे भी ज्यादा कम होने की आशंका था। उस समय सरकार ने एक्स-मिल 29 रुपये किलो फ्लोर प्राइस तय किया था। ऑल इंडिया शुगर ट्रेडर्स एसोसिएशन के चेयरमैन प्रफुल्ल विठलानी ने बताया कि एमएसपी लागू होने से पहले चीनी का 'स्टॉक इन ट्रेड' यानी कारोबारियों के पास मौजूद स्टॉक 20 लाख रहा करता था। हालांकि, अब चीनी पर्याप्त मात्रा में उपलब्ध है और उसकी कीमत भी तय है। इस स्थिति में कारोबारी स्टॉक जमा करने के बजाय हाथोंहाथ कारोबार कर रहे हैं। पिछले कुछ वर्षों में चीनी चीनी के उत्पादन और देशभर में समान भाव तय करने से इसकी कीमतों को लेकर होने वाली सट्टेबाजी पर रोक लगी है। पुणे के विजय गुजराथी का परिवार 1928 से चीनी का कारोबार कर रहा है। उनका कहना है, 'पिछले एक साल के दौरान हमारा चीनी का ट्रेडिंग वॉल्यूम काफी घटा है। अब हम गेहूं, ज्वार, दलहन, चाय, नमक जैसे अन्य कमोडिटीज पर फोकस कर रहे हैं।' सूखे की वजह से दलहन, ज्वार और अन्य अनाजों की कीमतों में काफी उतार-चढ़ाव होता है। इसलिए इनका व्यापार चीनी से अधिक फायदेमंद बन गया है।

> **पिछले साल** चीनी का न्यूनतम समर्थन मूल्य तय होने के बाद इसकी कीमत को लेकर होने वाली सट्टेबाजी बंद हो गई, अब सिर्फ घरेलू बाजार में व्यापार करने वाले अधिकतर छोटे और मझोले कारोबारी अन्य कमोडिटीज का रुख कर रहे हैं

महाराष्ट्र के कारोबारी उत्तर और उत्तर-पूर्व भारत का अपना पारंपरिक बाजार खो चुके हैं। विजय ने बताया, 'हम गुजरात, मध्य प्रदेश और महाराष्ट्र में काफी चीनी बेचते थे, जो अब लगभग बंद हो गया है।' सरकार ने निर्यात बढ़ाने के लिए काफी प्रोत्साहन भी दिया था। इसलिए जो व्यापारी घरेलू बाजार के बजाय निर्यात कर रहे थे, उन्हें ज्यादा फायदा हुआ। हालांकि, व्यापार जगत के कुछ सूत्रों ने बताया कि चीनी मिलें अपना स्टॉक एमएसपी पर नहीं बेच पा रही हैं और बड़े पैमाने पर अंडरकटिंग हो रही है। मुंबई के एक थोक कारोबारी ने नाम न छापने की शर्त पर बताया, 'व्यापार में तेजी या मंदी के ट्रेंड के बावजूद कुछ बिचौलिए अंडरकटिंग जैसे उपायों से मुनाफा कमाने कामयाब रहे हैं। बहुत से बिचौलिए एमएसपी से काफी कम दाम पर चीनी बेच रहे हैं।'

Economic Times
10/7/2019